सप्तम खण्ड

ठाकुर श्रीरामकृष्ण का कलकत्ता में निमन्त्रण

प्रथम परिच्छेद

(श्रीयुक्त ईशान मुखोपाध्याय की बाड़ी में शुभागमन)

दक्षिणेश्वर-कालीबाड़ी में मंगल आरती का मधुर शब्द सुनाई दे रहा है। उसी के संग प्रभाती राग में रोशनचौकी बज रही है। ठाकुर श्रीरामकृष्ण उठकर खड़े होकर मधुर स्वर से नाम कर रहे हैं। घर में जितनी भी देवी-देवियों की मूर्तियाँ पट पर चित्रित थीं, एक-एक करके प्रणाम किया। पश्चिम के कमरे के गोल बरामदे में जाकर भागीरथी-दर्शन किया और प्रणाम किया। भक्त कोई-कोई वहाँ हैं। उन्होंने प्रात:कृत्य समापन करके क्रमश: आकर ठाकुर श्रीरामकृष्ण को प्रणाम किया।

राखाल ठाकुर के संग अब यहाँ पर हैं। बाबूराम गत रात्रि में आए हैं। मणि ठाकुर के पास आज चौदह दिन से हैं।

आज बृहस्पतिवार है। अग्रहायण कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि, 27 दिसम्बर, 1883 ईसवी। आज सुबह-सुबह स्नान आदि करके ठाकुर कलकत्ता जाने का उद्योग (की तैयारी) कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण ने मणि को बुलाकर कहा, ''आज ईशान अपने घर आने के लिए कह गया है। बाबूराम जाएगा, तुम भी मेरे संग चलोगे।''

मणि चलने के लिए तैयार होने लगे।

शीतकाल। आठ बजे, नहबत के निकट आकर गाड़ी खड़ी हो गई। ठाकुर को ले जाएगी। चारों ओर पुष्प-वृक्ष, सामने भागीरथी, सब दिशाएँ

प्रसन्न, श्रीरामकृष्ण ने देवताओं के चित्रों के निकट खड़े होकर प्रणाम किया और माँ का नाम करते-करते यात्रा के लिए गाड़ी में बैठ गए। संग में बाबूराम, मणि। उन्होंने ठाकुर के शरीर की बनात, बनात की कानों को ढकने वाली टोपी और मसाले की थैली संग में ले ली है, क्योंकि शीतकाल है। सन्ध्या के समय ठाकुर शरीर पर गरम कपड़ा ओढ़ेंगे।

ठाकुर सहास्यवदन। सारे रास्ते आनन्द करते-करते आ रहे हैं। समय नौ का। गाड़ी कलकत्ता में प्रवेश करके श्यामबाजार होकर क्रमश: मछुआ बाजार के चौराहे पर आ उपस्थित हुई। मणि ईशान की बाड़ी जानते हैं। चौराहे पर गाड़ी का मोड़ फिरा कर ईशान के घर के सामने लाकर खड़ी करने के लिए कहा।

ईशान आत्मीयजनों के साथ सहास्यवदन ठाकुर की सादर अभ्यर्थना करके नीचे के बैठकखाने में ले गए। ठाकुर ने भक्तों के संग आसन ग्रहण किया।

परस्पर कुशल-प्रश्न के पश्चात् ठाकुर ईशान के पुत्र श्रीश के साथ बातें करते हैं। श्रीश एम०ए०, बी०एल० पास करके अलीपुर में वकालत करते हैं। एन्ट्रेन्स और एफ०ए० की परीक्षाओं में यूनिवर्सिटी में फर्स्ट हुए थे अर्थात् परीक्षा में प्रथम स्थान अधिकार किया था। अब उनकी वयस् प्राय: तीस वर्ष होगी। जैसा पाण्डित्य है वैसी ही विनय है, बाहर से देखने में लगता है कि ये कुछ भी नहीं जानते। हाथ जोड़कर श्रीश ने ठाकुर को प्रणाम किया। मणि ने ठाकुर को श्रीश का परिचय दिया और बताया कि ऐसी शान्त प्रकृति का व्यक्ति नहीं देखा।

(कर्म-बन्धन की महौषध और पाप-कर्म— कर्मयोग)

श्रीरामकृष्ण *(श्रीश के प्रति)*— तुम क्या करते हो जी ?

श्रीश— जी, मैं अलीपुर में जाता हूँ। वकालत करता हूँ।

श्रीरामकृष्ण *(मणि के प्रति)*— ऐसा व्यक्ति भी वकालत करता है ! *(श्रीश के प्रति)* अच्छा, तुम्हें कुछ पूछना है ?

''संसार में अनासक्त होकर रहना कैसे है ?''

श्रीश— किन्तु कार्य करते हुए संसार में कितना अनुचित करना पड़ता है! कोई पाप-कर्म करता है, कोई पुण्य-कर्म। ये सब क्या पूर्व कर्मों का फल है— इसलिए करना ही पड़ेगा?

श्रीरामकृष्ण— कर्म कितने दिन! जितने दिन उनको प्राप्त नहीं किया जाता। उनको प्राप्त करने पर सब हो जाता है। तब पाप-पुण्य के पार हो जाता है।

"फल दिखाई दे जाने पर फूल चला जाता है। फल होने के लिए फूल दिखाई देता है।

"सन्ध्यादि कर्म कितने दिन? जितने दिन ईश्वर का नाम करते हुए रोमाञ्च नहीं होता और आँखों से जल नहीं आता। ये समस्त अवस्थाएँ ईश्वर-लाभ के लक्षण हैं, ईश्वर में शुद्धाभक्ति की प्राप्ति के लक्षण हैं। उनको जान लेने पर पाप-पुण्य के पार हो जाता है।

"प्रसाद बोले भुक्ति मुक्ति उभय माथाय रेखेछि,
आमि काली ब्रह्म जेने मर्म धर्माधर्म सब छेड़ेछि।*

"उनकी ओर जितना बढ़ोगे, उतना ही वे कर्म कम कर देंगे। गृहस्थी की बहू के गर्भवती हो जाने पर सास धीरे-धीरे उसके काम कम कर देती है। जब दसवाँ मास लगता है, तब काम एकदम कम कर देती है। सन्तान हो जाने पर वह उसे ही लेकर हिलाती-डुलाती रहती है, उसी को लेकर आनन्द करती है।"

श्रीश— गृहस्थ में रहते हुए उनकी ओर जाना बड़ा कठिन है।

(गृहस्थ-संसारी को शिक्षा—अभ्यासयोग और निर्जन में साधन)

श्रीरामकृष्ण— क्यों? अभ्यासयोग? उस देश (गाँव) में बढ़इयों की स्त्रियाँ चिड़वा बेचती हैं। वे कितनी ओर सम्भालकर (कितनी तरफ ध्यान रखकर) काम करती हैं, सुनो। ढेंकी का पाट पड़ता है, हाथ से धानों को ठेलती जाती हैं, और एक हाथ से लड़के को गोद में लेकर स्तन पिलाती हैं। और फिर

* प्रसाद कहते हैं मैंने भुक्ति और मुक्ति दोनों को सिर पर रखा हुआ है। मैंने काली और ब्रह्म का मर्म जानकर धर्म-अधर्म सब छोड़ दिया है।

खरीदार आया है, ढेंकी इधर पड़ रही है और खरीदार के साथ बातें भी चलती हैं। खरीदार को कहती है, तो फिर तुम्हारे पास जो कितने पैसे उधार हैं, वे सब पैसे दे जाना, और चीज ले जाना।

''देखो— बच्चे को दूध पिलाना; ढेंकी पड़ रही है, धान ठेलते जाना; चावलों में से पतला चोकर निकलाकर संग्रह करना; और फिर खरीदार से बातें— सब एक साथ करती है। इसी का नाम है अभ्यासयोग। किन्तु उसका पँद्रह आना मन ढेंकी के पाट की ओर रहता है, कहीं हाथ पर न पड़ जाए! और एक आने में लड़के को स्तनपान करवाना और खरीदार के संग बातें करना। वैसे ही जो गृहस्थ (संसार) में हैं, उन्हें पन्द्रह आने मन भगवान में देना उचित है। बिना दिए सर्वनाश— काल के हाथ में पड़ना होगा। और एक आने से अन्य-अन्य कर्म करो।

''ज्ञान के पश्चात् संसार (गृहस्थ) में रहा जाता है। किन्तु पहले ज्ञान प्राप्त करना होगा। संसार-रूपी जल में मन-रूपी दूध रखने से मिल जाएगा। तभी मन-रूपी दूध को दही जमाकर निर्जन में मन्थन करके, माखन निकाल कर, संसार रूपी जल में रखना चाहिए।

''इतना होने पर ही हो जाता है। साधना का प्रयोजन है। प्रथम अवस्था में निर्जन में रहना बड़ा आवश्यक है। अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष जब पौधा होता है तब घेरा देना चाहिए, नहीं तो बकरी, गाय खा लेंगी। किन्तु तना मोटा होने पर घेरा हटा दिया जाता है। यहाँ तक कि हाथी बाँध देने पर भी वृक्ष को कुछ नहीं होता।

''जभी तो प्रथम अवस्था में बीच-बीच में निर्जन में चले जाना चाहिए। साधना का प्रयोजन है। भात खाना है। बैठे-बैठे कहते हो कि लकड़ी में आग है, उसी आग पर भात पकाया जाता है— ऐसा कहने से ही क्या भात तैयार होता है? फिर एक लकड़ी लाकर लकड़ी से लकड़ी रगड़नी चाहिए। तब आग निकलती है।

''भाँग खाने पर नशा हो जाता है, आनन्द आता है। खाए ना, कुछ भी करे ना, बैठे-बैठे कहे 'भाँग-भाँग'। उससे क्या नशा होता है, आनन्द आता है?''

(ईश्वर-लाभ— जीवन का उद्देश्य— परा और अपरा विद्या— दूध पीना)

''हजार लिखना-पढ़ना सीखो, ईश्वर में भक्ति बिना रहे, उनको प्राप्त करने की इच्छा बिना रहे— सब मिथ्या है। कोरा पण्डित, विवेक-वैराग्य नहीं जिसे, उसकी कामिनी-काञ्चन पर नज़र रहती है। गिद्ध बहुत ऊँचे उड़ता है, किन्तु नज़र मरघट पर।

''जिस विद्या को प्राप्त करने से उनको जान लिया जाता है, वही विद्या है, और सब मिथ्या।

''अच्छा, तुम्हारी ईश्वर के विषय में क्या धारणा है ?''

श्रीश— जी, इतना-सा ही बोध हुआ है— एक ज्ञानमय पुरुष हैं, उनकी सृष्टि देखने से उनके ज्ञान का परिचय मिलता है। यही एक बात कहता हूँ— शीतप्रधान देश में मछली तथा अन्य जलजन्तु बचाने के लिए उनका कौशल। जितनी ठण्ड होती है, जल के आयतन (विस्तार) का संकोच हो जाता है। किन्तु आश्चर्य, बरफ बनने से ज़रा पहले जल हल्का हो जाता है और जल का आयतन बढ़ जाता है ! तालाब के जल में अनायास ही खूब शीत में मछली रह सकती है। जल के ऊपरी भाग में सारी बरफ बन जाती है किन्तु नीचे जल है, ज्यों का त्यों। यदि खूब ठण्डी हवा बहती है तो वह हवा बरफ के ऊपर लगती है। नीचे का जल गरम रहता है।

श्रीरामकृष्ण— वे हैं, जगत देखकर समझ में आ जाता है। किन्तु उनके विषय में सुनना एक, उनको देखना एक, उनके संग आलाप करना और ही एक है। किसी ने दूध की बात सुनी है, किसी ने दूध-देखा है, किसी ने दूध पीया है। देखने से तो आनन्द होगा, पी लेने पर फिर बल होगा, व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट होगा। भगवान के दर्शन करने पर ही तो शान्ति होगी, उनके संग आलाप करने पर तब ही फिर आनन्द प्राप्त होगा, शक्ति बढ़ेगी।

(मुमुक्षुत्व वा ईश्वर के लिए व्याकुलता— समयसापेक्ष)

श्रीश— उनको पुकारने का समय नहीं मिलता।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— वह तो है। समय बिना हुए कुछ नहीं होता। एक

लड़के ने सोने के समय माँ से कहा, माँ मुझे जब टट्टी आवे मुझे उठा दियो। माँ ने कहा, बेटा, टट्टी ही तुम्हें उठा देगी; मुझे उठाना नहीं होगा।

''जिसको जो देना है, उनका सब निश्चित किया हुआ है। कसोरे के माप से सास बहुओं को भात दिया करती थी। उससे भात कुछ कम पड़ता था। एक दिन कसोरा टूट जाने पर बहुएँ खुश हुईं। तब सास ने कहा, 'नाचो-कूदो री बहुओ, मेरे हाथ को तो अटकल (अन्दाज) है'।''

(आम मुखत्यारी वा बकलमा दे दो)

श्रीश के प्रति— क्या करोगे? उनके चरणों में सब समर्पण करो, उनको आम मुखत्यारी दे दो। वे जो भला हो, करें। बड़े व्यक्ति के ऊपर यदि भार दिया जाए तो वह व्यक्ति कभी भी बुरा नहीं करेगा।

''साधना का प्रयोजन तो निश्चय ही है। किन्तु दो प्रकार के साधक हैं। एक प्रकार का साधक बन्दर के बच्चे के स्वभाव का और एक प्रकार का साधक बिल्ली के बच्चे के स्वभाव का होता है। बन्दर का बच्चा निज तो किसी तरह से करके माँ को पकड़े रहता है। उसी प्रकार कोई-कोई साधक सोचता है, इतना जप करना होगा, इतना ध्यान करना होगा, इतनी तपस्या करनी होगी, तभी भगवान प्राप्त होंगे। यह साधक अपनी चेष्टा करके भगवान को पकड़ने जाता है।

''किन्तु बिल्ली का बच्चा स्वयं माँ को नहीं पकड़ सकता। वह पड़ा हुआ केवल मिऊँ-मिऊँ कह कर पुकारता है। माँ जो भी करे। माँ कभी बिस्तर के ऊपर, कभी छत के ऊपर लकड़ी की ओट में रख देती है। माँ उसको मुख में पकड़ कर यहाँ-वहाँ ले जाकर रख देती है, वह माँ को पकड़ना नहीं जानता। उसी प्रकार कोई-कोई साधक स्वयं हिसाब करके कोई साधना नहीं कर सकता, इतना जप करूँगा, इतना ध्यान करूँगा इत्यादि। वह केवल व्याकुल होकर, रो-रोकर उनको पुकारता है। वे उसका क्रन्दन सुनकर फिर ठहर नहीं सकते, आकर दर्शन देते हैं।''

द्वितीय परिच्छेद

समय अधिक हो गया है। गृहस्वामी अन्न-व्यंजन (आहार) तैयार करवाकर ठाकुर को खिलाएँगे। इसलिए बड़े परेशान हैं। वे अन्दर घर में गए हैं और आहार की तैयारी और व्यवस्था कर रहे हैं।

समय हो गया है, तभी ठाकुर घबराए हुए-से हैं। वे कमरे में थोड़ा टहल रहे हैं, किन्तु सहास्यवदन हैं। केशव कीर्त्तनिया के साथ बीच-बीच में बातें कर रहे हैं।

[ईश्वर कर्त्ता— अथच कर्म के लिए जीव का दायित्व (responsibility)]

केशव कीर्त्तनिया— तब तो वे ही 'करण'-'कारण' हैं। दुर्योधन ने कहा था, 'त्वया हृषीकेश हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि'। (हे हृषीकेश, तुम हृदय में स्थित होकर जैसा मुझे नियुक्त करते हो, मैं वैसा ही करता हूँ।)

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— हाँ, वे सब करवा रहे हैं। वे ही कर्त्ता हैं, मनुष्य यन्त्र के स्वरूप है।

''और फिर यह ठीक है कि कर्म-फल तो है ही। लाल मिर्च खाने से ही पेट में जलन करेगी। उन्होंने ही कह दिया है कि खाने से पेट में जलन करेगी। पाप करने से ही उसका फल पाना पड़ेगा।

''जिस व्यक्ति ने उन्हें प्राप्त कर लिया है, जिसने ईश्वर-दर्शन कर लिया है, वह फिर पाप नहीं कर सकता। जिसका गला सधा हुआ है, उसके स्वर में सा, रे गा, मा ही निकल पड़ता है।''

अन्न प्रस्तुत हो गया। ठाकुर भक्तों के संग भीतर घर में गए और आसन ग्रहण किया। ब्राह्मण के घर में कई प्रकार के व्यञ्जन बने हैं, और नाना प्रकार की उपादेय मिठाइयों का आयोजन हुआ है।

समय तीन का हो गया है। आहार के पश्चात् ठाकुर श्रीरामकृष्ण ईशान की बैठक में आकर बैठ गए हैं। पास श्रीश और मास्टर बैठे हैं। ठाकुर श्रीश के संग में अब फिर बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— तुम्हारा क्या भाव है? 'सोऽहं' या 'सेव्य-सेवक'?

(गृहस्थ का ज्ञानयोग अथवा भक्तियोग)

''संसारी के लिए सेव्य-सेवक भाव खूब भला है। सब किया जाता है, उस अवस्था में 'मैं ही वह हूँ' यह भाव कैसे आ सकता है? जो कहता है, 'मैं ही वही हूँ', उसके लिए तो जगत स्वप्नवत् है, उसकी अपनी देह-मन भी स्वप्नवत् है, उसका 'मैं' तक भी स्वप्नवत् है, इसीलिए तो गृहस्थी का काम वह नहीं कर सकता। जभी सेवक-भाव, दास-भाव खूब अच्छा है।

''हनुमान का दास-भाव था। राम से हनुमान ने कहा था, 'राम! कभी सोचता हूँ, तुम पूर्ण हो, मैं अंश हूँ; तुम प्रभु हो, मैं दास हूँ; और जब तत्त्वज्ञान हो जाता है, तब देखता हूँ, तुम ही मैं हूँ, मैं ही तुम हो।

''तत्त्वज्ञान के समय सोऽहम् हो सकता है, किन्तु वह दूर की बात है।''

श्रीश— जी हाँ, दास-भाव में मनुष्य निश्चिन्त हो जाता है— प्रभु के ऊपर सम्पूर्ण निर्भर। जैसे कुत्ता है बड़ा प्रभु-भक्त, जभी प्रभु के ऊपर निर्भर करके निश्चिन्त रहता है।

(जो साकार वे ही निराकार— नाम-माहात्म्य)

श्रीरामकृष्ण— अच्छा! तुम्हें क्या अच्छा लगता है— साकार अथवा निराकार? बात क्या है, जानते हो? जो निराकार हैं, वे ही साकार हैं। भक्त की दृष्टि में वे साकार रूप में दर्शन देते हैं। जैसे अनन्त जल-राशि। महासमुद्र— कूल-किनारा नहीं। उसी जल के किसी-किसी स्थान पर बरफ जमी हुई है— अधिक ठण्ड में बरफ बन जाती है। ठीक उसी प्रकार भक्ति-हिम में साकार रूप दर्शन होते हैं। और फिर जैसे सूर्य उदय होने पर बरफ गल जाती है— फिर जैसा का तैसा जल। ठीक उसी प्रकार ज्ञान-पथ, विचार-पथ द्वारा जाने पर साकार रूप फिर नहीं दिखाई देता। और फिर सब निराकार। ज्ञान-सूर्य उदय होने पर साकार बरफ गल गई।

''किन्तु देखो, जिसका निराकार, उसका ही है साकार।''

सन्ध्या हुई, ठाकुर उठे। अब दक्षिणेश्वर लौटेंगे। बैठक के दक्षिण में जो

खुला चबूतरा है, उसके ऊपर ही खड़े होकर ठाकुर ईशान के साथ बातें करते हैं। यहाँ पर ही कोई कह रहे हैं कि

भगवान का नाम लेने से ही जो सर्वदा फल होगा, ऐसा तो नहीं दिखाई देता।

ईशान कहते हैं,

यह कैसी बात! अश्वत्थ का बीज इतना नन्हा तो चाहे है, किन्तु उसके भीतर बड़े से बड़ा वृक्ष है! वह वृक्ष देर में दिखाई देता है।

श्रीरामकृष्ण— हाँ-हाँ, देर में फल होता है।

(ईशान निर्लिप्त संसारी— परमहंस-अवस्था)

ईशान का घर ईशान के श्वसुर श्री क्षेत्रनाथ चाटुज्ये (चैटर्जी) के घर के पूर्व में है। दोनों घरों के मध्य आने-जाने का पथ है। चैटर्जी महाशय के घर के फाटक पर ठाकुर आकर खड़े हो गए। ईशान सबान्धव ठाकुर को गाड़ी पर बिठाने के लिए आ गए हैं।

ठाकुर ईशान से कहते हैं,

''तुम जो संसार में हो, ठीक पांकाल मछली की भाँति हो। तालाब के कीचड़ (पंक) में वह रहती है, किन्तु शरीर पर कीचड़ नहीं लगता।

''इस माया के संसार में विद्या-अविद्या दोनों ही हैं। परमहंस किसे कहता हूँ? जो हंस की भाँति दूध में जल मिला रहने पर भी जल को छोड़कर दूध ही दूध ले सकता है, चींटी की तरह चीनी और रेत एक साथ मिले रहने पर भी रेत छोड़कर चीनी-चीनी ग्रहण कर सकता है।''

तृतीय परिच्छेद

(श्रीरामकृष्ण का धर्म-समन्वय— ईश्वरकोटि का अपराध नहीं होता)

सन्ध्या हो गई है। भक्त श्रीयुक्त रामचन्द्र दत्त के घर में ठाकुर आए हैं। यहाँ से होकर तब दक्षिणेश्वर जाएँगे।

राम के बैठकखाने को आलोकित करते हुए ठाकुर भक्तों के संग में बैठे हैं। श्रीयुक्त महेन्द्र गोस्वामी के संग बातें कर रहे हैं। गोस्वामी की बाड़ी उसी मुहल्ले में है। ठाकुर उन्हें प्यार करते हैं। जब वे राम के घर आते हैं तो गोस्वामी आकर प्राय: ही उनसे मिलते हैं।

श्रीरामकृष्ण— वैष्णव, शाक्त सब के ही पहुँचने का स्थान एक है; किन्तु पथ अलग हैं। ठीक-ठीक वैष्णव शक्ति की निन्दा नहीं करते।

गोस्वामी *(सहास्य)*— हर-पार्वती हमारे बाप-माँ हैं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— थैंक यू, (Thank you), 'बाप-माँ'।

गोस्वामी— इसके अतिरिक्त किसी की निन्दा करना, विशेषत: वैष्णव द्वारा निन्दा करने से अपराध होता है— वैष्णवापराध। सब अपराधों की क्षमा है, वैष्णवापराध की माफी नहीं।

श्रीरामकृष्ण— अपराध सब का नहीं होता। ईश्वरकोटि का अपराध नहीं होता। जैसे चैतन्यदेव की भाँति अवतार का।

''लड़का यदि बाप को पकड़कर मेंढ़ के ऊपर चलता है, तो हो सकता है पोखरे में गिर जाए। किन्तु बाप यदि बेटे का हाथ पकड़ ले, तो वह लड़का कभी भी गिर नहीं सकता।

''सुनो, मैंने माँ से शुद्धा भक्ति माँगी थी। माँ से कहा था,
''यह लो अपना धर्म, यह लो अपना अधर्म; मुझे शुद्धा भक्ति दो। ''यह लो अपनी शुचि, यह लो अपनी अशुचि; मुझे शुद्धा भक्ति दो।
''यह लो अपना पाप, यह लो अपना पुण्य; मुझे शुद्धा भक्ति दो''

गोस्वामी— जी हाँ।

श्रीरामकृष्ण— सब मतों को नमस्कार करोगे। किन्तु एक है **निष्ठाभक्ति**। सब को प्रणाम तो करो चाहे, किन्तु विशेष एक के ऊपर प्राण देकर प्यार करने का नाम है निष्ठा।

''राम-रूप के अतिरिक्त हनुमान को कोई और रूप अच्छा नहीं लगता था।

''गोपियों की इतनी निष्ठा थी कि उन्होंने द्वारका के पगड़ी-बाँधे कृष्ण

को देखना भी नहीं चाहा।

''पत्नी देवर-जेठ इत्यादि की पाँव धोने के जल, आसन आदि द्वारा सेवा करती है, किन्तु पति की जिस प्रकार से सेवा करती है, वैसी सेवा और किसी की भी नहीं करती। पति के साथ में सम्बन्ध अलग है।''

राम ने कुछ मिठाई आदि द्वारा ठाकुर की पूजा की।

ठाकुर अब दक्षिणेश्वर जाएँगे। मणि से बनात (शॉल) और टोपी लेकर पहन ली। बनात की कान ढकने वाली टोपी है। ठाकुर भक्तों के संग गाड़ी पर बैठ रहे हैं। राम आदि भक्तगण उन्हें बिठा रहे हैं। मणि भी गाड़ी में चढ़ गए, दक्षिणेश्वर लौट रहे हैं।

स्वामी विवेकानन्द
(12-1-1863 — 4-7-1902)